बृहस्पति ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित बृहस्पति ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय बृहस्पतिवार के दिन संध्या काल से आरम्भ करना चाहिये। बृहस्पति ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पूर्वोत्तर दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या बृहस्पतिवार और रविवार को अवश्य करना चाहिये। बृहस्पति ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए बृहस्पति ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी पीपल या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ बृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ देवानां च ऋषीणां च गुरूं कांचनसन्निभम्।

बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

ध्यान मंत्र

देवानां गुरूः तद्वत् पीतवर्णः चतुर्भुजः।

दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः।।

बृहस्पति गायत्री मंत्र

ऊँ आंगिरसाय विद्महे

सुराचार्याय धीमहि।

तन्नोः गुरूः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरूवे नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ऐं क्लीं हुं बृहस्पतये नमः।

ऊँ श्रीं श्रीं गुरवे नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ बृं बृहस्पतये नमः।

श्री गिरिधर शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से संध्याकाल के समय करना चाहिए।